OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 4 Issue 6 [Nov- Dec] Year 2025*

Research Article

डिजिटल मीडिया और जनजातीय महिला सशक्तिकरण: एक समालोचनात्मक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

विजय सिंह [1*], डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़ [2]

[1] शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

[2] प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * विजय सिंह

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20051412

सारांश

डिजिटल मीडिया के तीव्र विस्तार ने आधुनिक समाज में सूचना, संचार और सहभागिता के स्वरूप को मूलतः परिवर्तित कर दिया है। विशेष रूप से हाशिए पर स्थित समूहों, जैसे जनजातीय महिलाओं, के संदर्भ में यह परिवर्तन नई संभावनाएँ और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य डिजिटल मीडिया और जनजातीय महिला सशक्तिकरण के बीच संबंध का एक समालोचनात्मक समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करना है। इस अध्ययन में सशक्तिकरण को केवल संसाधनों की उपलब्धता के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखा गया है जिसमें एजेंसी, पहचान, सामाजिक मान्यता और शक्ति-संबंधों का पुनर्गठन शामिल है। डिजिटल मीडिया को एक तटस्थ तकनीकी साधन के बजाय एक सामाजिक क्षेत्र के रूप में समझा गया है, जो विभिन्न प्रकार की असमानताओं और अवसरों को एक साथ निर्मित करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल मीडिया जनजातीय महिलाओं के लिए सूचना तक पहुँच, क्षमताओं के विकास, आर्थिक अवसरों और सामाजिक नेटवर्किंग के नए द्वार खोलता है। साथ ही, यह उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक स्थिति को पुनर्परिभाषित करने का अवसर भी प्रदान करता है। हालांकि, डिजिटल विभाजन, तकनीकी साक्षरता की कमी, भाषा संबंधी बाधाएँ और पितृसत्तात्मक नियंत्रण जैसे संरचनात्मक अवरोध इसके प्रभाव को सीमित करते हैं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 12-11-2025
- **Accepted:** 27-12-2025
- **Published:** 30-12-2025
- **IJCRM:**4(6); 2025: 734-739
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सिंह वि, राठौड़ ह स. डिजिटल मीडिया और जनजातीय महिला सशक्तिकरण: एक समालोचनात्मक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ कंटेम्परेरी रिसर्च इन मल्टीडिसिप्लिनरी. 2025;4(6): 734-739.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

प्रमुख शब्द: डिजिटल मीडिया, जनजातीय महिलाएं, सशक्तिकरण, डिजिटल विभाजन, सामाजिक परिवर्तन, पहचान।

© 2025 विजय सिंह, डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परिचय

इक्कीसवीं सदी में डिजिटल मीडिया ने समाज के संगठन, संचार और ज्ञान के स्वरूप को गहराई से बदल दिया है। इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के प्रसार ने सूचना तक पहुँच को सरल, त्वरित और व्यापक बना दिया है। इस परिवर्तन को अक्सर विकास और सशक्तिकरण के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, विशेष रूप से उन वर्गों के संदर्भ में जो ऐतिहासिक रूप से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से वंचित रहे हैं।

भारत में जनजातीय समुदाय लंबे समय से भौगोलिक अलगाव, सीमित संसाधनों और विकास की मुख्यधारा से दूरी के कारण हाशिए पर स्थित रहे हैं। इन समुदायों में महिलाओं की स्थिति और अधिक जटिल है, क्योंकि वे न केवल आर्थिक और शैक्षिक अवसरों से वंचित रहती हैं, बल्कि लैंगिक असमानता और सामाजिक नियंत्रण का भी सामना करती हैं। इस प्रकार, जनजातीय महिलाएं एक बहुस्तरीय वंचना की स्थिति में होती हैं, जहाँ जातीय, लैंगिक और क्षेत्रीय कारक एक-दूसरे के साथ मिलकर उनकी स्थिति को प्रभावित करते हैं। ऐसे संदर्भ में डिजिटल मीडिया का प्रवेश केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना में एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप है। यह जनजातीय महिलाओं को सूचना, ज्ञान और बाहरी दुनिया से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है, जिससे उनके जीवन में नई आकांक्षाएं और संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं। वे शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सरकारी योजनाओं से संबंधित जानकारी तक पहुँच बना सकती हैं तथा अपनी आवाज को व्यापक स्तर पर व्यक्त कर सकती हैं। हालांकि, डिजिटल मीडिया के प्रभाव को एकतरफा सकारात्मक रूप में नहीं देखा जा सकता। इसकी पहुँच और उपयोग में असमानताएँ, डिजिटल साक्षरता की कमी, भाषा संबंधी बाधाएँ तथा पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाएँ इसके प्रभाव को सीमित करती हैं। कई बार डिजिटल माध्यम स्वयं भी असमानताओं को पुनः उत्पन्न करते हैं, जहाँ कुछ समूह अधिक लाभान्वित होते हैं जबकि अन्य पीछे रह जाते हैं।

इसी संदर्भ में यह शोध-पत्र डिजिटल मीडिया और जनजातीय महिला सशक्तिकरण के संबंध का एक समालोचनात्मक समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि डिजिटल मीडिया किस प्रकार जनजातीय महिलाओं के जीवन में परिवर्तन लाता है, यह परिवर्तन किन शर्तों पर निर्भर करता है, और इसमें कौन-कौन सी संरचनात्मक एवं सांस्कृतिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

सशक्तिकरण का पुनर्विचार: एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

सामान्यतः सशक्तिकरण को संसाधनों की उपलब्धता, अधिकारों के विस्तार और निर्णय लेने की क्षमता से जोड़कर देखा जाता है, किन्तु समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह परिभाषा अधूरी मानी जाती है। सशक्तिकरण केवल बाहरी संसाधनों तक पहुँच प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह उन सामाजिक, सांस्कृतिक और संरचनात्मक परिस्थितियों को भी शामिल करता है जिनमें व्यक्ति अपनी क्षमता का उपयोग करता है। इसलिए सशक्तिकरण को एक स्थिर अवस्था के रूप में नहीं, बल्कि एक गतिशील और संदर्भ-निर्भर प्रक्रिया के रूप में समझना आवश्यक है।

अमर्त्य सेन के क्षमता दृष्टिकोण के अनुसार, विकास का वास्तविक अर्थ व्यक्तियों की स्वतंत्रताओं और क्षमताओं का विस्तार है। परन्तु केवल क्षमताओं का होना पर्याप्त नहीं है; उनका उपयोग सामाजिक मान्यताओं, सांस्कृतिक प्रतिबंधों और संस्थागत ढाँचों से प्रभावित होता है। इसी प्रकार नैला कबीर सशक्तिकरण को संसाधन, एजेंसी और उपलब्धियों के त्रिकोण के रूप में देखती हैं। यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि संसाधनों की उपलब्धता तब तक सशक्तिकरण में परिवर्तित नहीं होती, जब तक व्यक्ति उन संसाधनों के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक मान्यता प्राप्त न कर सके।

जनजातीय महिलाओं के संदर्भ में सशक्तिकरण की अवधारणा और भी जटिल हो जाती है। उनके लिए सशक्तिकरण केवल आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि यह अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए सामाजिक संरचनाओं के भीतर अपनी स्थिति को पुनर्परिभाषित करने की प्रक्रिया भी है। कई बार वे परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करते हुए नए अवसरों को अपनाती हैं, जिससे सशक्तिकरण एक संघर्ष पूर्ण और संवादात्मक प्रक्रिया बन जाता है। इसके अतिरिक्त, सशक्तिकरण को केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं समझा जा सकता, बल्कि यह सामूहिक और संरचनात्मक स्तर पर भी घटित होता है। जब सामाजिक मानदंड, शक्ति-संबंध और संस्थागत व्यवस्थाएँ बदलती हैं, तभी सशक्तिकरण का प्रभाव व्यापक रूप से दिखाई देता है। इस दृष्टि से सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति की एजेंसी और सामाजिक संरचना के बीच निरंतर अंतःक्रिया होती है।

अतः समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से सशक्तिकरण को केवल अवसरों की उपलब्धता के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिए जिसमें व्यक्ति अपनी पहचान, अधिकार और सामाजिक स्थिति को पुनः स्थापित करता है। यही व्यापक दृष्टिकोण जनजातीय महिलाओं के सशक्तिकरण को समझने में अधिक सार्थक और यथार्थपरक आधार प्रदान करता है।

डिजिटल मीडिया एक सामाजिक क्षेत्र के रूप में

डिजिटल मीडिया को सामान्यतः एक तटस्थ तकनीकी माध्यम के रूप में देखा जाता है, जो केवल सूचना के आदान-प्रदान का कार्य करता है। किन्तु समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह समझ अधूरी है। डिजिटल मीडिया वास्तव में एक सामाजिक क्षेत्र के रूप में कार्य करता है, जहाँ विभिन्न प्रकार के शक्ति-संबंध, असमानताएँ और अवसर एक साथ मौजूद रहते हैं। यह केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि एक ऐसा संरचनात्मक स्थान है जहाँ यह निर्धारित होता है कि कौन बोल सकता है, किसकी आवाज सुनी जाएगी और किसे दृश्यता प्राप्त होगी।

पियरे बोर्डियू के अनुसार समाज विभिन्न "क्षेत्रों" में विभाजित होता है, जहाँ विभिन्न प्रकार की पूंजी—सांस्कृतिक, सामाजिक और प्रतीकात्मक—की भूमिका होती है। डिजिटल मीडिया को भी इसी प्रकार के एक क्षेत्र के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ भागीदारी और प्रभाव व्यक्ति की डिजिटल साक्षरता , नेटवर्क और पहचान/मान्यता पर निर्भर करते हैं। जिन व्यक्तियों के पास ये पूंजी अधिक होती है, वे डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर अधिक प्रभावशाली बन जाते हैं, जबकि अन्य समूह, विशेष रूप से जनजातीय महिलाएं, सीमित भागीदारी तक ही रह जाती हैं।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल मीडिया की संरचना भी समान नहीं होती। विभिन्न प्लेटफ़ॉर्म एल्गोरिद्म के आधार पर कार्य करते हैं, जो यह निर्धारित करते हैं कि कौन-सा कंटेंट अधिक लोगों तक पहुँचेगा। इस

© 2025 विजय सिंह, डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रकार, डिजिटल स्पेस में भी एक प्रकार की "अदृश्य शक्ति" कार्य करती है, जो कुछ आवाजों को प्रमुखता देती है और अन्य को हाशिए पर रखती है।

जनजातीय महिलाओं के संदर्भ में यह स्थिति और अधिक जटिल हो जाती है। जब वे डिजिटल मीडिया में प्रवेश करती हैं, तो वे केवल उपयोगकर्ता नहीं होतीं, बल्कि एक ऐसे सामाजिक क्षेत्र में प्रवेश करती हैं जहाँ पहले से ही शक्ति-संबंध स्थापित होते हैं। उनकी भाषा, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और तकनीकी दक्षता यह निर्धारित करती है कि वे इस क्षेत्र में कितनी प्रभावी भागीदारी कर सकती हैं। साथ ही, डिजिटल मीडिया एक द्वंद्वात्मक प्रकृति रखता है। एक ओर यह जनजातीय महिलाओं को अपनी पहचान प्रस्तुत करने, अपनी आवाज उठाने और व्यापक समाज से जुड़ने का अवसर देता है; वहीं दूसरी ओर यह मुख्यधारा की संस्कृति और मूल्यों को भी उनके जीवन में प्रवेश कराता है, जिससे सांस्कृतिक दबाव और पहचान का संकट उत्पन्न हो सकता है।

अतः डिजिटल मीडिया को केवल एक तकनीकी उपकरण के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक संरचना और शक्ति के क्षेत्र के रूप में समझना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि सशक्तिकरण की प्रक्रिया केवल तकनीकी पहुँच पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि व्यक्ति उस सामाजिक क्षेत्र में किस प्रकार की पूंजी और स्थिति के साथ प्रवेश करता है और वहाँ अपनी जगह कैसे बनाता है।

जनजातीय महिलाएं: संदर्भ, पहचान और हाशियाकरण

जनजातीय महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भ को समग्र रूप से देखना आवश्यक है। जनजातीय समाज पारंपरिक रूप से प्रकृति-आधारित जीवन, सामुदायिक संबंधों और स्थानीय ज्ञान प्रणालियों पर आधारित रहा है। इन समुदायों में महिलाएं उत्पादन, परिवार और संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, फिर भी व्यापक सामाजिक संरचना में उनकी स्थिति अक्सर हाशिए पर रहती है।

जनजातीय महिलाओं का हाशियाकरण एकल कारण का परिणाम नहीं है, बल्कि यह कई परस्पर जुड़े कारकों—जैसे भौगोलिक अलगाव, आर्थिक संसाधनों की कमी, सीमित शिक्षा, और लैंगिक असमानता—से निर्मित होता है। वे मुख्यधारा के विकास मॉडल से दूर रहती हैं, जिससे उनकी आवाज और अनुभव नीति-निर्माण और सार्वजनिक विमर्श में कम दिखाई देते हैं। इस प्रकार, उनका हाशियाकरण केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और प्रतीकात्मक भी है।

पहचान के स्तर पर जनजातीय महिलाएं एक जटिल स्थिति में होती हैं। वे एक ओर अपनी सांस्कृतिक परंपराओं, भाषा और सामुदायिक जीवन से जुड़ी होती हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिकता और विकास की प्रक्रियाएं उनकी पहचान को प्रभावित करती हैं। इस द्वंद्व के कारण वे अपनी पारंपरिक पहचान को बनाए रखते हुए नए सामाजिक अवसरों को अपनाने का प्रयास करती हैं। कई बार यह प्रक्रिया संघर्ष पूर्ण होती है, क्योंकि बाहरी प्रभाव उनकी सांस्कृतिक अस्मिता को चुनौती दे सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, जनजातीय महिलाओं की भूमिका केवल "पीड़ित" के रूप में नहीं देखी जानी चाहिए। वे अपने समुदाय में सक्रिय एजेंट के रूप में भी कार्य करती हैं, जो परंपरा और परिवर्तन के बीच संतुलन स्थापित करती हैं। वे स्थानीय ज्ञान, सामुदायिक सहयोग और जीवन-निर्वाह के पारंपरिक तरीकों के माध्यम से अपने अस्तित्व को बनाए रखती हैं।

डिजिटल मीडिया के आगमन के साथ इस संदर्भ में नए आयाम जुड़ते हैं। यह उन्हें अपनी पहचान को व्यापक मंच पर प्रस्तुत करने, अपनी संस्कृति को साझा करने और बाहरी दुनिया से संवाद स्थापित करने का अवसर देता है। वहीं, यह मुख्यधारा के मूल्यों और जीवनशैली को भी उनके जीवन में प्रवेश कराता है, जिससे सांस्कृतिक परिवर्तन और पहचान के पुनर्गठन की प्रक्रिया तेज होती है।

अतः जनजातीय महिलाओं को केवल हाशिए पर स्थित समूह के रूप में नहीं, बल्कि एक जटिल सामाजिक इकाई के रूप में समझना चाहिए, जिनकी पहचान, अनुभव और संघर्ष बहुआयामी हैं। उनका सशक्तिकरण तभी संभव है जब उनके संदर्भ, संस्कृति और सामाजिक वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए नीतियाँ और हस्तक्षेप विकसित किए जाएं।

डिजिटल संदर्भ में सशक्तिकरण के आयाम

डिजिटल मीडिया के उदय के साथ सशक्तिकरण की प्रक्रिया ने एक नया स्वरूप ग्रहण किया है। अब सशक्तिकरण को केवल पारंपरिक आयामों—जैसे शिक्षा या आय—तक सीमित करके नहीं समझा जा सकता, बल्कि इसे एक बहुस्तरीय और परस्पर जुड़ी हुई प्रक्रिया के रूप में देखना आवश्यक है। डिजिटल संदर्भ में सशक्तिकरण उन तरीकों को दर्शाता है जिनके माध्यम से व्यक्ति सूचना, तकनीक और नेटवर्क का उपयोग करके अपनी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति को पुनर्गठित करता है।

सबसे पहले, सूचनात्मक सशक्तिकरण का आयाम महत्वपूर्ण है। डिजिटल मीडिया जनजातीय महिलाओं को ऐसी जानकारी तक पहुँच प्रदान करता है जो पहले उनके लिए उपलब्ध नहीं थी। यह जानकारी केवल ज्ञान नहीं बढ़ाती, बल्कि उनके जीवन से जुड़े निर्णयों—जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका—को अधिक सूचित और स्वतंत्र बनाती है।

दूसरा, क्षमतागत सशक्तिकरण डिजिटल मीडिया के माध्यम से विकसित होता है। जब महिलाएं डिजिटल उपकरणों का उपयोग करना सीखती हैं, तो वे नई क्षमताएँ अर्जित करती हैं—जैसे संचार, सूचना खोज, और तकनीकी समझ। यह उन्हें केवल उपयोगकर्ता नहीं, बल्कि सक्रिय सहभागी बनाता है, जिससे उनकी जीवन संभावनाएँ विस्तृत होती हैं।

तीसरा, आर्थिक सशक्तिकरण डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से संभव होता है। ऑनलाइन बाजार, डिजिटल भुगतान प्रणाली और मोबाइल बैंकिंग जैसी सुविधाएँ महिलाओं को पारंपरिक आर्थिक सीमाओं से बाहर निकलने का अवसर देती हैं। इससे वे आय अर्जित करने के नए साधन खोज पाती हैं और आर्थिक रूप से अधिक आत्मनिर्भर बनती हैं।

चौथा, सामाजिक और प्रतीकात्मक सशक्तिकरण का आयाम डिजिटल मीडिया में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म महिलाओं को अपनी पहचान व्यक्त करने, अपने अनुभव साझा करने और सामाजिक मान्यता प्राप्त करने का अवसर देते हैं।

© 2025 विजय सिंह, डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इससे उनकी दृश्यता बढ़ती है और वे सामाजिक विमर्श में अपनी जगह बना पाती हैं।

पाँचवां, राजनीतिक सशक्तिकरण डिजिटल माध्यमों के माध्यम से विकसित होता है। डिजिटल मीडिया महिलाओं को उनके अधिकारों, नीतियों और सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे वे लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में अधिक सक्रिय रूप से भाग ले सकती हैं। यह उन्हें केवल जानकारी प्राप्त करने वाला नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का सहभागी बनाता है।

अंततः, मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण भी एक महत्वपूर्ण आयाम है। डिजिटल मीडिया के माध्यम से महिलाएं अपनी आवाज व्यक्त करती हैं, जिससे उनके आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान और आत्म-अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि होती है। वे स्वयं को एक सक्रिय और सक्षम व्यक्ति के रूप में देखने लगती हैं।

इन सभी आयामों को अलग-अलग नहीं, बल्कि एक परस्पर जुड़े हुए ढाँचे के रूप में समझना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, सूचना तक पहुँच क्षमताओं को बढ़ाती है, जो आर्थिक अवसरों को जन्म देती है, और अंततः सामाजिक व राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करती है। अतः डिजिटल संदर्भ में सशक्तिकरण एक समग्र और अंतःक्रियात्मक प्रक्रिया है, जिसमें तकनीक, समाज और व्यक्ति के बीच निरंतर संबंध स्थापित होता है। जनजातीय महिलाओं के संदर्भ में यह प्रक्रिया तभी प्रभावी होती है जब डिजिटल पहुँच के साथ-साथ सामाजिक स्वीकृति, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और संस्थागत समर्थन भी मौजूद हो।

विरोधाभास और चुनौतियाँ

डिजिटल मीडिया को अक्सर सशक्तिकरण के एक प्रभावी साधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, किंतु वास्तविकता में यह प्रक्रिया कई विरोधाभासों और चुनौतियों से घिरी हुई है। विशेष रूप से जनजातीय महिलाओं के संदर्भ में, डिजिटल मीडिया एक ओर नए अवसर प्रदान करता है, तो दूसरी ओर यह मौजूदा असमानताओं को बनाए रखने या बढ़ाने का कारण भी बन सकता है।

सबसे प्रमुख चुनौती डिजिटल विभाजन है। यद्यपि डिजिटल तकनीक का प्रसार बढ़ा है, फिर भी जनजातीय क्षेत्रों में इंटरनेट की सीमित उपलब्धता, कमजोर नेटवर्क और डिजिटल उपकरणों की कमी महिलाओं की पहुँच को बाधित करती है। इसके साथ ही, परिवार के भीतर संसाधनों के वितरण में भी लैंगिक असमानता देखने को मिलती है, जहाँ पुरुषों की तुलना में महिलाओं को तकनीक तक कम पहुँच मिलती है।

दूसरा महत्वपूर्ण विरोधाभास पहुँच और उपयोग के बीच है। कई बार महिलाएं मोबाइल या इंटरनेट तक पहुँच तो प्राप्त कर लेती हैं, लेकिन डिजिटल साक्षरता की कमी के कारण वे उसका प्रभावी उपयोग नहीं कर पातीं। इस प्रकार, केवल तकनीक का उपलब्ध होना सशक्तिकरण की गारंटी नहीं देता।

तीसरा, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिबंध डिजिटल मीडिया के उपयोग को प्रभावित करते हैं। कई जनजातीय समुदायों में पारंपरिक मान्यताएं और पितृसत्तात्मक संरचनाएं महिलाओं की स्वतंत्रता को सीमित करती हैं। मोबाइल फोन या सोशल मीडिया के उपयोग को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है, जिससे महिलाओं की डिजिटल भागीदारी बाधित होती है।

चौथा, डिजिटल मीडिया एक नया जोखिम और असुरक्षा का क्षेत्र भी बनकर उभरता है। साइबर उत्पीड़न, गलत सूचना (misinformation), और गोपनीयता के उल्लंघन जैसी समस्याएं महिलाओं के लिए अतिरिक्त चुनौतियाँ उत्पन्न करती हैं। इन जोखिमों के कारण कई महिलाएं डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म से दूरी बनाए रखती हैं।

पाँचवां, भाषाई और सांस्कृतिक बाधाएँ भी महत्वपूर्ण हैं। अधिकांश डिजिटल सामग्री प्रमुख भाषाओं में उपलब्ध होती है, जिससे जनजातीय भाषाओं और स्थानीय ज्ञान को पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाता। इससे डिजिटल मीडिया में उनकी भागीदारी सीमित हो जाती है और सांस्कृतिक असमानता बढ़ सकती है।

इसके अतिरिक्त, एक महत्वपूर्ण विरोधाभास यह भी है कि डिजिटल मीडिया जहाँ एक ओर महिलाओं को अपनी पहचान और संस्कृति को प्रस्तुत करने का अवसर देता है, वहीं दूसरी ओर यह मुख्यधारा की संस्कृति को बढ़ावा देकर स्थानीय परंपराओं को कमजोर भी कर सकता है। इस प्रकार, यह सशक्तिकरण और सांस्कृतिक परिवर्तन के बीच एक द्वंद्वात्मक संबंध स्थापित करता है।

अतः यह स्पष्ट है कि डिजिटल मीडिया सशक्तिकरण का सरल और एक रैखिक माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें अवसर और बाधाएँ दोनों मौजूद हैं। जनजातीय महिलाओं के लिए वास्तविक सशक्तिकरण तभी संभव है जब इन चुनौतियों को समझते हुए तकनीकी, सामाजिक और नीतिगत स्तर पर समग्र प्रयास किए जाएं।

चर्चा: तकनीकी निर्धारणवाद से परे

डिजिटल मीडिया के संदर्भ में प्रचलित दृष्टिकोण अक्सर तकनीकी निर्धारणवाद पर आधारित होता है, जिसमें यह माना जाता है कि तकनीक स्वयं सामाजिक परिवर्तन और सशक्तिकरण को स्वतः उत्पन्न कर देती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, जैसे ही डिजिटल उपकरण और इंटरनेट की पहुँच बढ़ेगी, वैसे ही समाज में समानता, विकास और सशक्तिकरण स्वतः स्थापित हो जाएगा। किन्तु समाजशास्त्रीय विश्लेषण इस धारणा को चुनौती देता है।

वास्तविकता यह है कि तकनीक स्वयं में न तो तटस्थ होती है और न ही स्वतः परिवर्तनकारी; उसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भ में उपयोग की जा रही है। जनजातीय महिलाओं के संदर्भ में डिजिटल मीडिया का प्रभाव केवल उसकी उपलब्धता पर नहीं, बल्कि सामाजिक मानदंडों, पारिवारिक संरचना, शिक्षा के स्तर और संस्थागत समर्थन पर निर्भर करता है।

डिजिटल मीडिया के माध्यम से प्राप्त अवसर तभी सशक्तिकरण में परिवर्तित होते हैं जब महिलाएं उन अवसरों का उपयोग करने की क्षमता और स्वतंत्रता रखती हैं। यदि सामाजिक संरचना महिलाओं की एजेंसी को सीमित करती है, तो तकनीक केवल एक सीमित साधन बनकर रह जाती है। इस प्रकार, सशक्तिकरण एक संरचना और एजेंसी के बीच अंतःक्रिया का परिणाम है, न कि केवल तकनीकी हस्तक्षेप का।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल मीडिया स्वयं भी शक्ति-संबंधों से प्रभावित होता है। कौन-सी जानकारी प्रमुख होगी, किसकी आवाज अधिक सुनी जाएगी, और किसे दृश्यता मिलेगी—ये सभी पहलू सामाजिक असमानताओं से जुड़े होते हैं। इस दृष्टि से डिजिटल मीडिया केवल

© 2025 विजय सिंह, डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अवसरों का विस्तार नहीं करता, बल्कि कभी-कभी मौजूदा असमानताओं को पुनः स्थापित भी करता है।

जनजातीय महिलाओं के लिए यह स्थिति और अधिक जटिल हो जाती है, क्योंकि उन्हें डिजिटल माध्यमों का उपयोग करते समय न केवल तकनीकी बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है। इसलिए, डिजिटल मीडिया को सशक्तिकरण का एकमात्र समाधान मानना एक सरलीकृत दृष्टिकोण है।

अतः तकनीकी निर्धारणवाद से आगे बढ़ते हुए यह समझना आवश्यक है कि सशक्तिकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें तकनीक के साथ-साथ सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक संदर्भ और नीतिगत हस्तक्षेप की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। डिजिटल मीडिया तब ही प्रभावी सशक्तिकरण का माध्यम बन सकता है जब इसे सामाजिक न्याय, समान अवसर और स्थानीय संदर्भों के साथ जोड़ा जाए।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल मीडिया जनजातीय महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण, किंतु जटिल और बहुआयामी माध्यम है। यह केवल सूचना तक पहुँच प्रदान करने का साधन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों, पहचान और शक्ति-संरचनाओं को भी प्रभावित करता है। डिजिटल मीडिया जनजातीय महिलाओं को शिक्षा, आर्थिक अवसर, सामाजिक नेटवर्किंग और राजनीतिक जागरूकता के नए आयाम प्रदान करता है, जिससे उनके जीवन में परिवर्तन की संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं।

हालांकि, यह परिवर्तन स्वयंसिद्ध या समान रूप से वितरित नहीं है। डिजिटल विभाजन, तकनीकी साक्षरता की कमी, सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ तथा साइबर जोखिम जैसी चुनौतियाँ इस प्रक्रिया को सीमित करती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि केवल तकनीकी पहुँच सशक्तिकरण की गारंटी नहीं है, बल्कि इसके लिए सामाजिक स्वीकृति, संस्थागत समर्थन और सांस्कृतिक अनुकूलन भी आवश्यक हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से सशक्तिकरण को एक सतत और संदर्भ-निर्भर प्रक्रिया के रूप में समझना चाहिए, जिसमें एजेंसी और संरचना के बीच निरंतर अंतःक्रिया होती है। डिजिटल मीडिया इस प्रक्रिया को प्रभावित करता है, लेकिन उसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि महिलाएं उसे किस प्रकार अपनाती हैं और समाज उन्हें कितना समर्थन प्रदान करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि डिजिटल मीडिया जनजातीय महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक संभावना शील मंच है, परंतु इसका वास्तविक प्रभाव तभी संभव है जब इसे समावेशी नीतियों, डिजिटल साक्षरता, लैंगिक समानता और स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों के साथ जोड़ा जाए। अंततः सशक्तिकरण का उद्देश्य केवल तकनीकी पहुँच नहीं, बल्कि महिलाओं को एक सक्रिय, आत्मनिर्भर और सम्मानित सामाजिक इकाई के रूप में स्थापित करना होना चाहिए।

संदर्भ

1. Aker JC, Mbiti IM. Mobile phones and economic development in Africa. J Econ Perspect. 2010;24(3):207–232.
2. Antonio A, Tuffley D. The gender digital divide in developing countries. Future Internet. 2014;6(4):673–687.
3. boyd d. It's complicated: The social lives of networked teens. Yale University Press; 2014.
4. Bourdieu P. The forms of capital. In: Richardson J, editor. Handbook of theory and research for the sociology of education. Greenwood; 1986. p. 241–258.
5. Castells M. The rise of the network society. 2nd ed. Wiley-Blackwell; 2010.
6. Chakraborty S. Digital literacy and women empowerment in India. Int J Soc Sci Stud. 2017;5(10):34–41.
7. Choudhury S. ICTs and tribal women empowerment in India. J Rural Dev. 2019;38(2):215–230.
8. Couldry N, Hepp A. The mediated construction of reality. Polity Press; 2017.
9. DiMaggio P, Hargittai E, Celeste C, Shafer S. Digital inequality. In: Neckerman K, editor. Social inequality. Russell Sage Foundation; 2004. p. 355–400.
10. Donner J. Research approaches to mobile use in the developing world. Inf Soc. 2008;24(3):140–159.
11. Ekka A, Toppo R. Digital inclusion and tribal women in India. Indian J Soc Work. 2021;82(1):77–96.
12. GSMA. The mobile gender gap report 2020. GSMA; 2020.
13. Gurumurthy A, Chami N. Gender equality in the information society. IT for Change; 2014.
14. Hafkin N, Huyer S. Women and gender in ICT statistics. Inf Technol Int Dev. 2007;4(2):25–41.
15. Hargittai E. Second-level digital divide. First Monday. 2002;7(4).
16. Heeks R. Do ICTs contribute to development? J Int Dev. 2010;22(5):625–640.
17. Hilbert M. Digital gender divide or empowered women? Womens Stud Int Forum. 2011;34(6):479–489.
18. Kabeer N. Resources, agency, achievements. Dev Change. 1999;30(3):435–464.
19. Kikon D. Indigenous identity and digital spaces. Econ Polit Wkly. 2015;50(13):41–48.
20. Loader BD, Mercea D. Networking democracy? Inf Commun Soc. 2011;14(6):757–769.
21. Mohanty BB. Development interventions among tribal communities. Soc Change. 2011;41(2):177–194.
22. Norris P. Digital divide: Civic engagement and internet worldwide. Cambridge University Press; 2001.
23. Pal J. Gender and ICT in India. Inf Technol Int Dev. 2010;6(1):1–11.
24. Sen A. Development as freedom. Oxford University Press; 1999.
25. Srinivasan J, Burrell J. Revisiting the fishers of Kerala. Inf Technol Int Dev. 2015;11(2):1–15.

© 2025 विजय सिंह, डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

26. Suri T, Jack W. Poverty and gender impacts of mobile money. Science. 2016;354(6317):1288–1292.
27. Van Dijk J. Digital divide research. Poetics. 2006;34(4–5):221–235.
28. Warschauer M. Technology and social inclusion. MIT Press; 2003.
29. Xaxa V. Tribes and caste. Pearson; 2011.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 विजय सिंह, डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/